इब्रानियों

इब्रानियों का पत्र

1 प्राचीन काल में परमेश्वर ने पूर्वजों
से अलग-अलग समयों में और
अलग-अलग तरीकों से भविष्यद्वक्ताओं के
द्वारा बातें कीं। 2 उन्होंने इन आखिरी दिनों में
हम से बेटे के द्वारा बातें की, जिन्हें उन्होंने
सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और जिन
के द्वारा परमेश्वर ने सारी सृष्टि रची है।
3 वह परमेश्वर की महिमा का तेज, और
उनके व्यक्तित्व का स्पष्ट रूप[a] हैं। वही
सब वस्तुओं को अपने सामर्थ के शब्द
से संभालते हैं। वह अपराधों, भूल-चूक,
अपराधों को धो कर आदर और अधिकार
की जगह पर महामहिम के दाहिने जा बैठे।
4 वह स्वर्गदूतों से उतने ही बेहतर ठहरे,
जितना उन्होंने उन से बड़े पद का वारिस
होकर बेहतर नाम पाया।
5 क्योंकि स्वर्गदूतों में से परमेश्वर ने कब
किसी से कहा, कि "तुम मेरे बेटे हो, आज
तुम मुझ से उत्पन्न हुए?" और फिर यह,
"कि मैं उसका पिता होऊँगा, और वह मेरा
बेटा होगा?" 6 और जब सर्वश्रेष्ठ[b] को जगत
में फिर लाते हैं, तो कहते हैं कि परमेश्वर
के सब स्वर्गदूत उन्हें दण्डवत् करें। 7 और
स्वर्गदूतों के विषय में यह कहते हैं "कि
वह अपने दूतों को आत्माएँ, और अपने
सेवकों को आग की ज्वाला बनाते हैं।"
8 परन्तु बेटे से कहते हैं कि, "हे परमेश्वर,
आपका राजासन हमेशा बना रहेगा। आपके
राज्य का राजदण्ड धार्मिकता का राजदण्ड
है। 9 आपने खराई से प्रेम और बुराई से बैर
रखा। इसलिए परमेश्वर, आपके परमेश्वर
ने आपके साथियों से बढ़ कर आनन्द के
तेल से आपको अभिषेक किया।" 10 और
यह कि, "हे प्रभु, आदि में आपने पृथ्वी
की नींव डाली, और आकाश आपके हाथों
की कारीगरी है। 11 वे तो नाश हो जाएँगे,
परन्तु आप बने रहेंगे और वे सब कपड़ों
के समान पुराने हो जाएँगे। 12 आप उन्हें
चादर के समान लपेटेंगे, और वे बदल जाएँगे
लेकिन आप वही हैं और आप सदा बने
रहेंगे।" 13 और स्वर्गदूतों में से उन्होंने किस
से कब कहा, "कि तुम अधिकार के साथ[c]
विराजमान रहो, जब तक कि मैं तुम्हारे
दुश्मनों को तुम्हारे पैरों के नीचे की चौकी
न कर दूँ।"
14 क्या स्वर्गदूत देख-भाल करने वाली
आत्माएँ नहीं, जो मुक्ति पाए हुए[d] लोगों के
लिए मदद करने को भेजी जाती हैं?

2 इसलिए चाहिए कि हम उन बातों पर
जो हम ने सुनी हैं, और भी मन लगाएँ,
ऐसा न हो कि सुनी हुयी बातों से बहक जाएँ।
2 क्योंकि जो बातें स्वर्गदूतों के द्वारा कही
गयी थीं यदि वे बनी रहीं और हर एक गुनाह
और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला
मिला, 3 तो हम लोग ऐसी बड़ी मुक्ति से
बेफिक्र रह कर कैसे बच सकते हैं, जिस
की चर्चा पहले पहल यीशु के द्वारा हुई,
और सुनने वालों के द्वारा पुष्टि की गयी?
4 साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के

[a] **1.3** प्रतिमा [b] **1.6** पहलौठे [c] **1.13** मेरे दाहिने हाथ पर [d] **1.14** उत्तराधिकारी बने हुए

अनुसार चिन्हों, अजीब कामों, और अनेक
तरह के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा
के वरदानों के बाँटने के द्वारा इसकी गवाही
देते रहे।
5 परमेश्वर ने उस आने वाले जगत को
जिस की चर्चा हम कर रहे हैं, स्वर्गदूतों के
वश न किया, 6 लेकिन किसी ने कहीं यह
गवाही दी है, कि इन्सान क्या है कि आप उस
का ख्याल रखते हैं या अपनी निगाह उस पर
रखते हैं? 7 आपने थोड़े समय के लिए यीशु
को स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया। आपने
उनके सिर पर महिमा और आदर का मुकुट
रखा और अपने हाथों के कामों पर अधिकार
दिया। 8 आपने 'सब कुछ' उनके पाँवों के
नीचे कर दिया, इसलिए जब कि परमेश्वर
ने सब कुछ यीशु के अधीन कर दिया, तो
उन्होंने कुछ भी रख न छोड़ा, जो यीशु के
अधीन न हो परन्तु हम अब तक सब कुछ
उनके अधीन नहीं देखते। 9 परन्तु हम यीशु
को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किए गये
थे, मौत का दुख उठाने के कारण महिमा और
आदर का मुकुट पहने हुए देखते हैं, ताकि
परमेश्वर की कृपा से हर एक मनुष्य के लिए
मौत का स्वाद चखें।
10 क्योंकि जिस परमेश्वर के लिए सब
कुछ है, और जिन के द्वारा सब कुछ है,
उन्हें यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से
बेटों को महिमा में पहुँचाएँ, तो उनका मुक्ति
देने वाला पूरा दुख[a] उठाए 11 क्योंकि पवित्र
करने वाला अर्थात् यीशु और जो पवित्र
किए जाते हैं अर्थात् विश्वासी, सब एक
ही स्त्रोत से हैं, इसी कारण यीशु उन्हें भाई
कहने से नहीं शर्माते, 12 किन्तु कहते हैं कि
"मैं आपका नाम अपने भाईयों को सुनाऊँगा,
सभा के बीच में मैं आपका भजन गाऊँगा?"
13 और फिर यह कि मैं उस पर भरोसा रखूँगा,
और फिर "देखो मुझे और इन बच्चों को, जो
परमेश्वर ने मुझे दिये हैं।"
14 इसलिए जब कि बच्चे मांस और लोहू
के हिस्सेदार हुए हैं, तो वह आप भी उसमें
सहभागी हुए, ताकि अपनी मौत के द्वारा उसे,
अर्थात् शैतान को जिसे मौत पर हक मिला
था, कमज़ोर[b] कर दे। 15 और जितने मौत के
डर के कारण जीवन भर गुलामी में फँसे थे,
उन्हें छुड़ा ले,
16 क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं,
लेकिन अब्राहम के वंश को संभालते हैं।
17 इस कारण उनको चाहिए था कि सब
बातों में अपने भाईयों के समान हों, जिस से
वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध
रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य
महा-पुरोहित बन सकें, ताकि लोगों के
अपराधों के बदले में प्रायश्चित्त करने के लिए
मरें। 18 वह उनकी भी मदद कर सकते हैं,
जिन की परख होती है, क्योंकि उन्होंने भी
परखे जाने के समय में दुख उठाया।

3 सो हे पवित्र भाईयो, तुम जो ऊपरी
बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और
महापुरोहित यीशु पर ध्यान करो, जिसे हम
कबूल[c] करते हैं। 2 वह अपने नियुक्त करने
वाले के लिए भरोसेमंद थे, जैसा मूसा भी
परमेश्वर के सारे घर में था। 3 क्योंकि वह
मूसा से इतना बढ़ कर महिमा के लायक
समझे गये हैं, जितना कि घर का बनाने वाला
घर से बढ़ कर आदर पाता है। 4 हर एक घर
को कोई न कोई बनाने वाला होता है, परन्तु
जिस ने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर हैं।
5 मूसा उनके सारे घर में सेवक के समान
विश्वासयोग्य रहा, ताकि जिन बातों को

[a] **2.10** क्रूस की मौत तक [b] **2.14** निकम्मा [c] **3.1** अंगीकार

बाद में बताया जाने वाला था, उनकी गवाही
दे। 6 परन्तु मसीह बेटे के समान उनके घर
के अधिकारी हैं, और उनका घर हम हैं,
अगर हम साहस में, और अपनी आशा के
आनन्द में अन्त तक मज़बूती से स्थिर रहें।
7 इसलिए जैसा पवित्र आत्मा कहता है कि
यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, 8 तो अपने
मनों को कठोर न करो, जैसा जंगल में विद्रोह
के समय और परीक्षा के दिनों में इस्राएलियों
ने किया था, 9 जहाँ तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे
जाँचकर परखा और चालीस साल तक मेरे
काम देखे। 10 इस कारण मैं उस समय के
लोगों से नाराज़ था, और मैंने कहा, कि इन
के मन सदा भटकते रहते हैं, और इन्होंने मेरे
रास्तों को नहीं पहचाना। 11 तब मैंने गुस्से
में आकर शपथ खायी कि वे मेरे आराम में
प्रवेश करने न पाएँगे।

12 हे भाईयो-बहनो, सावधान रहो, कि तुम
में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो
जीवित परमेश्वर से दूर हट जाए। 13 लेकिन
जब तक इसे आज का दिन कहा जाता है,
हर दिन एक दूसरे की हिम्मत बढ़ाते रहो,
ऐसा न हो, कि तुम में से कोई व्यक्ति गुनाह
के छल में आकर सख़्त हो जाए। 14 क्योंकि
हम मसीह के साथ हिस्सेदार हुए हैं, यदि
हम अपने शुरू के विश्वास से आखिर तक
मज़बूती में बने रहें। 15 जैसा कि कहा जाता
है कि अगर आज तुम उसकी आवाज़ सुनो,
तो अपने मनों को कठोर न करो, जैसा कि
गुस्सा दिलाने के समय इस्राएलियों ने किया
था।

16 किन लोगों ने सुन कर गुस्सा दिलाया
था? क्या उन सब ने नहीं, जो मूसा के द्वारा
मिस्र से निकले थे? 17 वह चालीस साल
तक किन लोगों से नाराज़ रहे? क्या उन्हीं
से नहीं, जिन्होंने बलवा किया, और उनके
शव जंगल में पड़े रहे? 18 उन्होंने किन से
शपथ खाई कि तुम मेरे आराम में प्रवेश करने
न पाओगे? क्या केवल उन से नहीं जिन्होंने
आज्ञा न मानी? 19 इसलिए हम देखते हैं कि
वे अविश्वास के कारण दाखिल न हो सके।

4 इसलिए जब कि परमेश्वर के आराम[a]
में प्रवेश करने[b] का वायदा अब तक है,
तो हमें सावधानी बरतनी चाहिए, ऐसा न हो
कि तुम में से कोई व्यक्ति उस वायदे से चूक
जाए। 2 हमें उन्हीं की तरह खुशी का समाचार
सुनाया गया है, लेकिन सुने हुए संदेश[c] से
उन्हें कुछ फ़ायदा न हुआ, क्योंकि सुनने
वालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा।
3 हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस चैन में
दाखिल होते हैः जैसा परमेश्वर ने कहा कि,
“मैंने अपने क्रोध में प्रतिज्ञा की, कि वे मेरे
आराम में प्रवेश करने न पाएँगे।” हालांकि
सृष्टि की शुरूआत से पहले परमेश्वर के
काम पूरे हो चुके थे। 4 क्योंकि सातवें दिन के
विषय में कहीं इस तरह कहा है “परमेश्वर ने
सातवें दिन कुछ न बनाया क्योंकि छः दिनों
में रचना का कार्य खत्म हुआ।”

5 यह भी लिखा है, कि “वे मेरे आराम में
प्रवेश न कर पाएँगे।”

6 तो जब यह बात बाकी है कि दूसरे और
हैं जो उस आराम में प्रवेश करें, और जिन्हें
उनका सुसमाचार पहले सुनाया गया, उन्होंने
आज्ञा न मानने के कारण उसमें प्रवेश न
किया। 7 तो फिर वह किसी विशेष दिन
को ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की
पुस्तक में उसे आज का दिन कहते हैं। जैसे
पहले कहा गया, “यदि आज तुम उसका
शब्द सुनो, तो तुम्हारे मन ढिठाई न दिखाएँ।”

[a] **4.1** विश्राम [b] **4.1** दाखिल होने [c] **4.2** वचन

8 और यदि यहोशू उन्हें आराम में प्रवेश
करा लेता, तो उसके बाद दूसरे दिन की चर्चा
न होती।
9 इसलिए यह जान लो कि परमेश्वर के
लोगों के लिए सब्त का आराम बाकी है।
10 क्योंकि जिस ने उनके आराम में प्रवेश
किया है, उसने भी परमेश्वर की तरह अपने
कामों को खत्म[a] किया है। 11 इसलिए हम
उस आराम में प्रवेश करने की पूरी कोशिश
करें, ऐसा न हो कि कोई उन लोगों के समान
आज्ञा न मानकर गिर पड़े।
12 क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित
और शक्तिशाली, और हर एक दोधारी
तलवार से भी बहुत चोखा है, आत्मा और
प्राण को, और गाँठ-गाँठ, और गूदे-गूदे को
अलग करके, आर पार छेदता है, और मन
की इच्छाओं और विचारों को जाँचता है।
13 सृष्टि की कोई वस्तु सृष्टिकर्ता से छिपी
नहीं है। और ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है, जो
उनकी दृष्टि से छिपा हो, परन्तु उनकी आँखों
के सामने सब वस्तुएँ खुली और बेपरदा हैं,
जिन्हें हमें लेखा देना होगा।
14 इसलिए जब हमारे ऐसे महापुरोहित हैं,
जो स्वर्ग में दाखिल हो चुके हैं, अर्थात्
परमेश्वर के बेटे यीशु, तो आओ, हम अपने
विश्वास को मज़बूती से थामे रहें। 15 क्योंकि
हमारे ऐसे महापुरोहित[b] नहीं, जो हमारी
कमज़ोरियों में हमारे साथ दुखी न हो सकें,
लेकिन वह सब बातों में हमारे समान परखे
तो गये, तौभी बेगुनाह निकले।
16 इसलिए आओ, हम उस राजासन के
पास हिम्मत से पहुँचें, जहाँ कृपा मिलती है,
ताकि ज़रूरत के वक्त हमें मदद मिल सके।

5 क्योंकि हर एक महापुरोहित इन्सानों में
से चुना जाता है, और इन्सानों ही के
लिए उन बातों के बारे में जो परमेश्वर से
सम्बन्ध रखती हैं, ठहराया जाता है कि भेंट
और बलिदान, गुनाहों के लिए चढ़ाया करे।
2 यह महापुरोहित कम समझ रखने वालों,
और भूले भटकों के साथ नरमी से व्यवहार
कर सकता है, इसलिए कि वह आप भी
कमज़ोरी से घिरा है। 3 और इसीलिए उसे
चाहिए कि जैसे लोगों के लिए, वैसे ही अपने
लिए भी अपराध-बलि चढ़ाया करे। 4 यह
आदर का पद कोई अपने आप से नहीं लेता,
जब तक कि हारून की तरह परमेश्वर की
तरफ़ से ठहराया न जाए।
5 वैसे ही मसीह ने भी महापुरोहित बनने
का बड़प्पन अपने आप से नहीं लिया, परन्तु
उन्हें परमेश्वर ने दिया, जिन्होंने उन से कहा
था कि, “तुम मेरे बेटे हो, मैंने ही तुम्हें जन्म
दिया है।” 6 वह दूसरी जगह में भी कहते
है, “आप मलिकिसिदक की तरह हमेशा के
लिए पुरोहित हैं।”
7 यीशु ने अपनी देह में रहने के दिनों में
ऊँचे शब्द से पुकार पुकार कर, और आँसू
बहा बहा कर परमेश्वर से जो उनको मौत
से बचा सकते थे, 8 प्रार्थनाएँ और बिनतियाँ
की, और उनके समर्पण के कारण उनकी
सुनी गई। 9 बेटा(देहधारी) होने पर भी, यीशु
आज्ञा मानते गये, हांलाकि उन्हें दुख उठाते
रहना पड़ा। वह मज़बूत बन कर अपने सब
आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल की
मुक्ति का कारण हो गए। 10 और उन्हें[c]
परमेश्वर की ओर से मलिकिसिदक की
तरह महापुरोहित का पद मिला।

[a] **4.10** पूरा [b] **4.15** याजक [c] **5.10** यीशु को

11 इस विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी
हैं, जिन का समझाना भी कठिन है, इसलिए
कि तुम ऊँचा सुनने लगे हो। 12 समय के
विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था,
लेकिन ऐसा लगता है, कि तुम्हें अभी भी एक
ऐसे इन्सान की ज़रूरत है जो तुम्हें परमेश्वर
द्वारा दी गई शिक्षा[a] की मूल बातों को फिर से
सिखाए? तुम ऐसे हो गए हो कि तुम्हें अनाज
के बदले अब तक दूध ही चाहिए। 13 दूध
नए विश्वासियों के लिए है जिन्हें परमेश्वर
के रास्ते का अनुभव नहीं है, क्योंकि वे बच्चे
हैं। 14 लेकिन ठोस खाना सयानों के लिये है,
जिन्होंने अपने मनों को अभ्यास के द्वारा भले
बुरे में भेद करने का ज्ञान हासिल किया है।

6 इसलिए आओ, मसीह के बारे में
शुरुआती शिक्षाओं के ऊपर बहस
करना छोड़कर, हम परिपूर्णता की ओर आगे
बढ़ते जाएँ, और अनुचित कामों से मुड़ने
और परमेश्वर पर विश्वास करने, 2 और
बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुओं के
जी उठने, और सनातन न्याय की बुनियाद
फिर से न डालें। 3 और यदि परमेश्वर चाहें,
तो हम यही करेंगे।

4 क्योंकि जिन्होंने एक बार सच्चाई जान ली
है, और जो स्वर्गिक वरदान का स्वाद चख
चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए
हैं, 5 और परमेश्वर की उत्तम शिक्षा का और
आने वाले युग की सामर्थ का स्वाद चख
चुके हैं 6 यदि वे भटक जाएँ, तो उन्हें मन
बदलाव के लिए फिर नया बनाना असंभव है
क्योंकि वे परमेश्वर के बेटे(यीशु) को अपने
लिए फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और खुले रूप
में उन पर कलंक लगाते हैं।

7 क्योंकि जो ज़मीन बरसात के पानी को
जो इस पर बार-बार पड़ता है, पी पीकर
जिन के द्वारा जोती-बोई जाती है, उनके काम
का साग-पात उपजाती है, वह परमेश्वर से
आशीष पाती है। 8 परन्तु यदि वह झाड़ी और
ऊँटकटारे उगाती है, तो निकम्मी और सज़ा
लायक है, और उसका अन्त जलाया जाना
है।

9 हे प्रियो, हालांकि हम ये बातें कहते हैं,
तौभी तुम्हारे विषय में हम इस से अच्छी
बेहतर बातों का भरोसा करते हैं। 10 क्योंकि
परमेश्वर अन्यायी नहीं कि तुम्हारे काम,
और उस मेहनत को भूल जाए, जो तुमने
उनके नाम के लिए इस तरह से दिखाया,
कि दूसरे पवित्र जनों की सेवा की, और कर
भी रहे हो। 11 हम बहुत चाहते हैं कि तुम में
से हर एक जन आखिर तक पूरी आशा के
लिए ऐसी ही समझदारी से काम ले 12 ताकि
तुम आलसी न हो जाओ वरन् उनको नमूना
बनाओ जो विश्वास और धीरज के द्वारा
वायदों के वारिस होते हैं।

13 और परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा
देते समय जब शपथ खाने के लिए किसी
को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही
शपथ खा कर कहा, 14 "मैं सचमुच तुम्हें
बहुत आशीष दूँगा, और तुम्हारी सन्तान को
बढ़ाता जाऊँगा।"

15 और इस तरह से उसने धीरज धर कर
प्रतिज्ञा के नतीजे को पाया।

16 मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की
शपथ खाया करते हैं, और उनके हर एक
विवाद का फ़ैसला शपथ से पक्का होता
है। 17 इसलिए जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के
वारिसों पर और भी साफ़ तरह से प्रगट

[a] **5.12** बाइबल

करना चाहा, कि उनकी मनसा बदल नहीं
सकती, तो शपथ को बीच में लाए, 18 ताकि
दो बे-बदल बातों के द्वारा जिन के विषय
में परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना है,
हमारा दृढ़ता से ढाढ़स बन्ध जाए, जो शरण
लेने को इसलिए दौड़े हैं कि उस आशा को
जो सामने रखी हुई है, प्राप्त करें।
19 यह आशा हमारे प्राण के लिए ऐसा
लंगर है जो स्थिर और मज़बूत है, और
पर्दे के अन्दर तक पहुँचता है, 20 जहाँ
यीशु मलिकिसिदक की तरह सदा काल के
महापुरोहित बन कर हमारे लिए अगुवे के
रूप में दाखिल हो चुके हैं।

7 इस शालेम के राजा मलिकिसिदक ने,
जो परम प्रधान परमेश्वर के लिए सदा
के लिए पुरोहित है, अब्राहम से भेंट करके
उस समय उसे आशीष दी, जब वह[a] राजाओं
को मार कर लौट रहा था। 2 इसी को अब्राहम
ने सब वस्तुओं का दसवाँ अंश भी दिया।
यह पहले अपने नाम के अर्थ के अनुसार,
“धार्मिकता का राजा”, 3 और फिर “शालेम
अर्थात् शान्ति का राजा” है। इसका न पिता,
न माता, न वंशावली है, न ही इसके जीवन
की शुरुआत है, और न जीवन का अन्त
है, फिर भी परमेश्वर के बेटे के स्वरूप में
ठहराये जाने के कारण वह निरन्तर पुरोहित
बना रहता है।
4 अब इस पर ध्यान करो कि वह कैसा
महान था, जिस को कुलपति अब्राहम ने
अपनी अच्छी से अच्छी लूट के माल का
दसवाँ अंश दिया। 5 लेवी की सन्तान में से जो
पुरोहित का पद पाते हैं, उन्हें आज्ञा मिली थी
कि लोगों, अर्थात् अपने भाईयों से, हालाँकि
वे अब्राहम ही की देह से जन्में थे, व्यवस्था[b]
के अनुसार दसवाँ भाग लें। 6 लेकिन उसने,
जो उनकी वंशावली में का भी न था, अब्राहम
से दसवाँ अंश लिया और जिसे प्रतिज्ञाएँ
मिली थीं उसे आशीष दी। 7 इस में संदेह
नहीं, कि छोटा बड़े से आशीष पाता है।
8 यहाँ तो मरनहार मनुष्य दसवाँ अंश लेते हैं,
परन्तु वहाँ वही दसवाँ भाग लेता है, जिस
की गवाही दी जाती है कि वह जीवित है।
9 तो हम यह भी कह सकते हैं कि लेवी ने
भी, जो दसवाँ लेता है, अब्राहम में होकर
दसवाँ हिस्सा दिया। 10 क्योंकि जिस समय
मलिकिसिदक ने लेवी के पिता से मुलाकात
की, उस समय वह अपने पिता की देह में
था।
11 तब यदि लेवीय पुरोहित पद के द्वारा,
सिद्धता हो सकती है[c] तो फिर क्या ज़रूरत
थी, कि दूसरा पुरोहित मलिकिसिदक की
तरह खड़ा हो, और हारून की रीति का न
कहलाए? 12 क्योंकि जब पुरोहितपन बदला
गया है, तो व्यवस्था का भी बदलना अवश्य
है। 13 क्योंकि जिस के विषय में ये बातें कही
जाती हैं कि वह दूसरे गोत्र का है, जिस में से
किसी ने वेदी की सेवा नहीं की, 14 तो साफ़
है, कि हमारा प्रभु यहूदा के गोत्र में से उदय
हुआ है और इस गोत्र के विषय में मूसा ने
पुरोहितपन की कुछ चर्चा नहीं की।
15 यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है,
क्योंकि मलिकिसिदक के समान एक और
ऐसा पुरोहित उत्पन्न होने वाला था, 16 जो
शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार
नहीं, परन्तु अविनाशी जीवन की सामर्थ
के अनुसार ठहराया गया, तो हमारा दावा
और भी साफ़ तरीके से प्रगट हो गया।

[a] **7.1** अब्राहम [b] **7.5** नियमशास्त्र [c] **7.11** जिस के सहारे से लोगों को नियमशास्त्र मिला था

17 क्योंकि उसके विषय में यह गवाही दी
गई है, “कि तुम मलिकिसिदक की तरह
युगानुयुग पुरोहित हो।”
18 क्योंकि पहली आज्ञा कमज़ोर और
निष्फल होने के कारण खत्म हो गई। 19 a
और उसके स्थान पर एक ऐसी उत्तम आशा
रखी गई है, जिस के द्वारा हम परमेश्वर के
समीप जा सकते हैं।
20 और इसलिए कि मसीह की नियुक्ति
बिना शपथ नहीं हुई, 21 वे लोग तो बिना
शपथ पुरोहित ठहराए गए, परन्तु यह शपथ
के साथ उसकी ओर से नियुक्त किया गया
जिस ने उनके बारे में कहा, “कि प्रभु ने
शपथ खाई, और वह उस न मुकरेंगे, ‘आप
युगानुयुग पुरोहित हैं। ’” 22 इसीलिए, यीशु
एक उत्तम वाचा की गारण्टी ठहरे।
23 बहुत से पुरोहित बनते आए थे, इसका
कारण यह था कि मौत उन्हें रहने नहीं देती
थी। 24 लेकिन यह युगानुयुग हैं, इस कारण
यीशु का पुरोहितपन अटल है। 25 इसीलिए
जो उनके[b] द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं,
वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकते हैं,
क्योंकि वह उनके लिए बिनती करने के लिए
हमेशा जीवित हैं।
26 इसलिए ऐसा ही महायाजक या पुरोहित
हमारे योग्य था, जो पवित्र, निष्कपट और
निर्मल, और अपराधियों से अलग, और
स्वर्ग से भी ऊँचा किया गया हो, 27 और उन
महापुरोहितों के समान उन्हें[c] आवश्यक नहीं
कि प्रतिदिन पहले अपने अपराधों और फिर
लोगों के अपराधों के लिए बलिदान चढ़ाएँ,
क्योंकि यीशु ने अपने आप को बलिदान
चढ़ाकर उसे एक ही बार निपटा दिया।
28 क्योंकि नियमशास्त्र तो कमज़ोर मनुष्यों
को महापुरोहित नियुक्त करता है, परन्तु
उस शपथ का वचन जो नियमशास्त्र के बाद
खाया गया, उस बेटे को नियुक्त करता है
जो युगानुयुग के लिए सिद्ध किये गये हैं।

8 अब जो बातें हम कह रहे हैं, उन में से
सब से खास बात यह है, कि हमारा ऐसा
प्रधान पुरोहित है, जो स्वर्ग पर महा-महिम
के राजासन पर अधिकार के साथ है, 2 और
पवित्र स्थान और उस सच्चे तम्बू का सेवक
हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं, किन्तु प्रभु
ने खड़ा किया था।
3 क्योंकि हर एक प्रधान पुरोहित भेंट और
बलिदान चढ़ाने के लिए ठहराया जाता है,
इस कारण ज़रूर है, कि उसके पास भी कुछ
चढ़ाने के लिए हो। 4 यदि वह पृथ्वी पर
होता, तो कभी पुरोहित न होता, इसलिए कि
नियमशास्त्र के अनुसार भेंट चढ़ाने वाले तो
हैं, 5 जो स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप और
प्रतिबिम्ब की सेवा करते हैं, जैसे जब मूसा
तम्बू बनाने पर था, उसे यह चेतावनी मिली
कि ध्यान से जो नमूना उसे पहाड़ पर दिखाया
गया था, उसी के अनुसार सब कुछ बनाए।
6 परन्तु यीशु को उसकी सेवकाई से बढ़
कर सेवा मिली, क्योंकि वह और भी उत्तम
वाचा के मध्यस्थ ठहरे, जो और उत्तम
प्रतिज्ञाओं के सहारे बान्धी गई है। 7 क्योंकि
यदि वह पहली वाचा बिना किसी खोट और
कमी की होती, तो दूसरी के लिए अवसर न
ढूँढा जाता। 8 किन्तु वह उन पर दोष लगा
कर कहता है, “कि प्रभु कहता है, देखो,
वे दिन आते हैं, कि मैं इस्राएल के घराने
के साथ, और यहूदा के घराने के साथ, नई
वाचा बान्धूँगा। 9 यह उस वाचा के समान
न होगी, जो मैंने उनके पूर्वजों के साथ उस
समय बान्धी थी, जब मैं उनका हाथ पकड़

[a] **7.19** इसलिए कि यहूदी नियमों ने किसी बात को सिद्धता प्रदान नहीं की [b] **7.25** यीशु के [c] **7.27** यीशु को

कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, क्योंकि
वे मेरी वाचा में बने नहीं रहे, और मैंने उनका
ख्याल न रखा, 10 फिर प्रभु कहते हैं कि "जो
वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने
के साथ बान्धूँगा, वह यह है, कि मैं अपने
नियमों को उनके मनों में डालूँगा, और उसे
उनके आत्मा पर लिखूँगा, और मैं उनका
परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे।
11 और हर एक अपने देश वासी को और
अपने भाई को यह शिक्षा न देगा कि तुम प्रभु
को पहचानो, क्योंकि छोटे से बड़े तक सब
मुझे जान लेंगे। 12 क्योंकि मैं उनकी बुराई के
विषय में दयावन्त होऊँगा, और उनकी बुराई
को फिर याद न करूँगा।
13 नई वाचा की स्थापना से उन्होंने प्रथम
वाचा को रद्द कर दिया, और जो वस्तु पुरानी
और कमज़ोर हो जाती है उसका मिट जाना
ज़रूरी है।

9 उस पहली वाचा में भी सेवा के नियम
थे और ऐसा पवित्र स्थान जो इस दुनिया
का था। 2 इस में एक तम्बू था। तम्बू में पहले
दीवट, और मेज़, और भेंट की रोटियाँ थीं।
वह पवित्र स्थान कहलाता है। 3 दूसरा पर्दे
के पीछे वह तम्बू था, जो परम पवित्र-स्थान
कहलाता है। 4 उसमें सोने की धूपदानी, और
चारों ओर से सोने से मढ़ा हुआ वाचा का
बक्सा और इस में मन्ना से भरा हुआ सोने
का मर्तबान और हारून की छड़ी, जिस में
फूल निकल आए थे और वाचा की पटियाँ
थीं। 5 बक्से के ऊपर दोनों तेज से भरे करूब
थे, जो प्रायश्चित्त के ढक्कन पर छाया किए हुए
थे। इन का एक-एक करके वर्णन करने का
अभी अवसर नहीं है।
6 जब ये वस्तुएँ इस रीति से तैयार हो
चुकीं, तब पहले तम्बू में तो पुरोहित कभी
भी दाखिल होकर सेवा के काम करने लगे।
7 परन्तु दूसरे में केवल प्रधान पुरोहित वर्ष भर
में एक ही बार जाता था। वहाँ वह खून लेकर
जाता था, जिसे वह अपने लिए और लोगों
की भूल-चूक के लिए चढ़ाता था। 8 इस से
पवित्र आत्मा यही दिखाता है, कि जब तक
पहला तम्बू और यह जो कुछ दर्शाता है
खड़ा है, तब तक महा पवित्र स्थान में प्रवेश
नहीं कर सकता। 9 और यह तम्बू तो वर्तमान
समय के लिए एक दृष्टांत है जिस में ऐसी
भेंट और बलिदान चढ़ाए जाते हैं, जिन से
आराधना करने वालों के विवेक शुद्ध नहीं
हो सकते। 10 इसलिए कि वे केवल खाने पीने
की वस्तुओं, और भांति-भांति के स्नान विधि
के आधार पर शारीरिक नियम हैं, जो नए
क्रम[a] के आने तक थे।
11 लेकिन मसीह आने वाली अच्छी-अच्छी
वस्तुओं का प्रधान पुरोहित होकर आये, और
उन्होंने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर
जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात् इस
दुनिया का नहीं, 12 और न ही बकरों और
बछड़ों के खून से, किन्तु अपने ही खून के
द्वारा एक ही बार हमारे लिए अनन्त आज़ादी
प्राप्त करके पवित्र स्थान में प्रवेश किया।
13 क्योंकि जब बकरों और बैलों का खून
और बछड़े की राख अशुद्ध लोगों पर छिड़के
जाने से बाहरी रूप से शुद्ध किए जाते हैं,
14 तो मसीह का खून जिस ने अपने आप को
सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने
निष्कलंक चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे
हुए कामों से और ज़्यादा क्यों न शुद्ध करेगा,
ताकि हम जीवित परमेश्वर की सेवा करें?

[a] **9.10** नई वाचा

15 इसी कारण वह नई वाचा के मध्यस्थ हैं,
ताकि उस मौत के द्वारा जो पहली वाचा के
समय के अपराधों से आज़ादी पाने के लिए
हुई है, बुलाए हुए लोग वायदे के अनुसार
अनन्त मीरास को प्राप्त करें।
16 क्योंकि जहाँ वसीयतनामा तैयार किया
गया वहाँ वसीयतनामा बनाने वाले की मौत
को समझ लेना भी ज़रूरी है। 17 क्योंकि ऐसा
वसीयतनामा मरने पर ही अमल में आता
है, और जब तक वसीयतनामा बनाने वाला
ज़िन्दा रहता है, तब तक वह काम का नहीं
होता।
18 इसीलिए पहली वाचा भी बिना खून के
नहीं बान्धी गई, 19 क्योंकि जब मूसा सब
लोगों को परमेश्वर की हर एक आज्ञा सुना
चुका, तो उसने बछड़ों और बकरों का खून
लेकर, पानी और लाल ऊन, और जूफ़ा के
साथ, उस किताब पर और सब लोगों पर
छिड़क दिया, 20 और कहा, " यह उस वाचा
का खून है, जिस की आज्ञा परमेश्वर ने
तुम्हारे लिए दी है।"
21 और इसी तरह से उसने तम्बू और
सेवा के सारे सामान पर खून छिड़का।
22 नियमशास्त्र के अनुसार प्रायः सब वस्तुएँ
खून के द्वारा शुद्ध की जाती हैं। बिना खून
बहाए गुनाहों की माफ़ी नहीं है। 23 इसलिए
ज़रूरी था कि स्वर्ग की चीज़ों के प्रतिरूप इन
बलिदानों द्वारा शुद्ध किए जाते, परन्तु स्वर्ग
की वस्तुएँ, इन से भी उत्तम बलिदानों के द्वारा
शुद्ध की जातीं।
24 क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए
पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्र स्थान का
नमूना है, प्रवेश नहीं किया, लेकिन स्वर्ग
ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिए अब
परमेश्वर के सामने मौजूद हों। 25 यह नहीं
कि वह अपने आप को बार-बार चढ़ाएँ, जैसा
कि प्रधान पुरोहित प्रति वर्ष कुर्बानियों का
खून लिए पवित्र स्थान में प्रवेश किया करता
था, 26 नहीं तो दुनिया की शुरूआत से लेकर
यीशु को बार-बार दुख उठाना पड़ता, लेकिन
अब युग के आखिर में वह एक बार प्रगट हुए
हैं, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा गुनाह
की सज़ा को उठा लें।
27 जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और
उसके बाद इन्साफ़ का होना ठहराया गया
है, 28 वैसे ही मसीह भी बहुतों के गुनाहों की
सज़ा को उठा लेने के लिए एक बार बलिदान
हुए। जो लोग उनका इंतज़ार करते हैं, उन्हें
सज़ा-मुक्ति के बाद की[a] आशीषों को देने के
लिये वह बादलों में दिखायी देंगे।

10 क्योंकि नियमशास्त्र जिस में आने
वाली अच्छी चीज़ों की छाया है,
लेकिन उनकी असलियत नहीं, इसलिए उन
एक ही तरह के बलिदानों के द्वारा, जो हर
साल चढ़ाए जाते हैं, भक्ति करने वालों को
बिल्कुल पूरी शुद्धता नहीं दे सकते, 2 यदि
ऐसा हो सकता तो उनका चढ़ाना बन्द क्यों
हो जाता? भक्ति[b] करने वाले एक ही बार
शुद्ध हो जाते, तो फिर उनका विवेक उन्हें
दोषी न ठहराता। 3 लेकिन उनके द्वारा हर
साल अपराधों का स्मरण हुआ करता है।
4 क्योंकि ऐसा हो ही नहीं सकता है, कि बैलों
और बकरों का खून अपराधों को दूर करे।
5 इसी कारण वह जगत में आते समय
कहते हैं, "बलिदान और भेंट आपने न
चाही, लेकिन मेरे लिए एक देह तैयार की।
6 होम-बलियों और अपराध-बलियों से आप

[a] **9.28** भविष्य की [b] **10.2** सेवा

खुश नहीं हुए।” 7 तब मैंने कहा, ‘देखो, मैं आ
गया हूँ,[a] ताकि हे परमेश्वर, आपकी इच्छा
पूरी करूँ।’
8 वह कहते हैं, कि न आपने बलिदान और
भेंट और होम-बलियों और अपराध-बलियों
को चाहा, और न उन से खुश हुए, यद्यपि ये
बलिदान तो नियमशास्त्र के अनुसार चढ़ाए
जाते थे। 9 वह यह भी कहते हैं, “देखिए, मैं
आ गया हूँ, ताकि आपकी इच्छा पूरी करूँ,
" वह पहले को हटा देते हैं, ताकि दूसरे को
उसकी जगह लाया जा सके।
10 उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह
के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा
पवित्र किए गए हैं।
11 और हर एक पुरोहित खड़े होकर हर
दिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के
बलिदान को जो गुनाहों को कभी भी दूर नहीं
कर सकते, बार-बार चढ़ाता है। 12 परन्तु
यह[b] तो अपराधों के बदले एक ही बलिदान
सर्वदा के लिए चढ़ा कर परमेश्वर के दाहिने
जा बैठे, 13 और उसी समय से वह इसका
इन्तज़ार कर रहे हैं, कि उनके दुश्मन उनके
पाँवों के नीचे की चौकी बनें।
14 क्योंकि यीशु ने एक ही बलिदान के द्वारा
उन्हें जो अलग किए जाते हैं, सर्वदा के लिए
शुद्ध[c] कर दिया है।
15 पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता
है, 16 “कि प्रभु कहते हैं कि जो वाचा मैं उन
दिनों के बाद उन से बान्धूँगा वह यह है, कि
मैं अपने नियमों को उनके मन पर लिखूँगा
और मैं उनके मन में डालूँगा। 17 फिर वह यह
कहते हैं, “मैं उनके अपराधों को, और उनके
अनुचित[d] कामों को कभी याद न करूँगा।
18 जब इन की माफ़ी हो गई है, तो फिर
अपराध का बलिदान न रहा।
19 इसलिए हे भाईयो-बहनो, जब कि हमें
यीशु के खून के द्वारा उस नये और जीवित
रास्ते से पवित्र जगह में दाखिल होने की
हिम्मत हो गयी है, 20 जो यीशु ने पर्दे अर्थात्
अपनी देह में से होकर, हमारे लिए खोल
दिया[e] है। 21 और इसलिए कि हमारा ऐसा
महान मध्यस्थ[f] है, जो परमेश्वर के घर का
अधिकारी है, 22 तो आओ हम सच्चे मन, और
पूरे ईमान के साथ, और विवेक के कचोटते
रहने को दूर करने के लिए मन पर छिड़काव
लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवा कर
परमेश्वर के पास जाएँ।
23 और अपनी आशा के अंगीकार को
मज़बूती से थामे रहो, क् योंकि जिस ने
वायदा किया है वह सच्चे हैं। 24 और प्रेम,
और भले कामों में दूसरों को बढ़ाने के लिए
एक दूसरे का ध्यान रखा करो, 25 और एक
दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ो, जैसे कि
बहुत से लोग करते हैं, लेकिन एक दूसरे को
समझाते रहो, और जैसे-जैसे उस दिन को
पास आते देखो, वैसे-वैसे और भी अधिक
यह किया करो।
26 क्योंकि सच्चाई की पहचान हासिल करने
के बाद यदि हम जान बूझकर यीशु का
इन्कार करेंगे, तो गुनाहों की माफ़ी के लिए
फिर और कोई कुर्बानी न होगी। 27 हाँ, दण्ड
की एक भयानक प्रतीक्षा और आग का
जलना बाकी है, जो विरोधियों को भस्म कर
देगी। 28 जब कि मूसा की व्यवस्था का न
मानने वाला दो या तीन जनों की गवाही पर,
बिना दया के मार डाला जाता है 29 तो सोच

[a] **10.7** पवित्र वचन में मेरे विषय में लिखा हुआ है [b] **10.12** यीशु [c] **10.14** सिद्ध [d] **10.17** गलत
[e] **10.20** अभिषेक किया [f] **10.21** याजक, पुरोहित

लो कि वह और कितनी भारी सज़ा के लायक
ठहरेगा, जिस ने परमेश्वर के बेटे को पाँवों
से रौंदा, और वाचा के खून को जिस के
द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र
जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान
किया। 30 क्योंकि हम परमेश्वर को जानते
हैं, जिन्होंने कहा, “बदला लेना[a] मेरा काम
है, मैं ही दण्ड दूँगा” और फिर यह कि प्रभु
अपने लोगों[b] का इन्साफ़ करेंगे।
31 जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना
भयानक बात है।
32 उन पहले दिनों को याद करो, जब तुम
सच्चाई को जानने की वजह से दुखों में
भी मज़बूत रहे। 33 कुछ तो बदनामी, और
सताव सहते हुए तमाशा बने, और कुछ इस
तरह, कि तुम उनके साझी हुए जिन के साथ
बुरा व्यवहार किया जाता था। 34 क्योंकि
तुम कैदियों के दुख में भी दुखी हुए, और
अपनी संपत्ति भी आनन्द से लुटने दी, यह
जान कर कि तुम्हारे पास एक और भी
उत्तम और हमेशा ठहरने वाली दौलत है।
35 इसलिए अपनी हिम्मत न छोड़ो क्योंकि
उसका परिणाम बड़ा होगा। 36 तुम्हें सब्र
रखना ज़रूरी है, ताकि परमेश्वर की इच्छा
को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल[c] पाओ।
37 अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है जब
कि आने वाला आएगा, और देर न करेगा।
38 और विश्वास से माफ़ी पाया हुआ जन,
जीवन को बना कर रखेगा. यदि वह विश्वास
रखना छोड़ दे तो मेरा मन उससे खुश न
होगा।
39 हम उन लोगों की तरह नहीं हैं,जो
विश्वास छोड़ देने की वजह से वापस बर्बाद
हो जाते हैं,लेकिन हम विश्वास में बने रहेंगे
ताकि उद्धार[d] की आशीष में बने रहें।

11 अब विश्वास आशा की हुई
वस्तुओं का आश्वासन[e] और
अनदेखी चीज़ों का सबूत है,
2 क्योंकि इसी के द्वारा बुज़ुर्गों[f] की अच्छी
गवाही दी गई।
3 विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी
दुनिया की रचना परमेश्वर के वचन से हुई
है। यह नहीं कि जो कुछ दिखाई देता है, वह
देखी हुई चीजों से बना हो।
4 विश्वास ही से हाबिल ने कैन से उत्तम
कुर्बानी परमेश्वर के लिए चढ़ायी, और उसी
के द्वारा उसके विश्वासी होने की गवाही भी
दी गई, क्योंकि परमेश्वर ने उसकी भेंटों के
बारे में गवाही दी, और उसी के द्वारा वह मरने
पर भी अब तक बातें करता है।
5 विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया कि
मौत को न देखे, और उसका पता नहीं चला,
क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और
उसके उठाए जाने से पहले उसके विषय में
यह कहा गया था, कि उसने परमेश्वर को
खुश किया है।
6 विश्वास बिना उन्हें खुश करना असंभव
है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को
विश्वास करना चाहिए कि वह हैं और अपने
चाहने वालों को जवाब देते हैं[g]।
7 विश्वास ही से नूह ने उन बातों के बारे में
जो उस समय दिखाई नहीं देती थीं, परमेश्वर
से चेतावनी पाकर भक्ति के साथ अपने
परिवार के बचाव के लिए जहाज़ बनाया,
और उसके द्वारा उसने दुनिया को आरोपी

[a] **10.30** चुकता करना [b] **10.30** इस्राएलियों [c] **10.36** परिणाम [d] **10.39** मुक्ति [e] **11.1** निश्चय
[f] **11.2** पूर्वजों [g] **11.6** खोजने वालों को प्रतिफल मिलता है

ठहराया, और उस पद का वारिस हुआ, जो
विश्वास से है।
8 विश्वास ही से अब्राहम को जब बुलाया
गया तो वह आज्ञा मानकर ऐसी जगह चल
पड़ा, जिसे विरासत में लेने वाला था, और
यह न जानते हुए भी कि कहाँ जा रहा है, वह
चल पड़ा।
9 विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए
देश में, जैसे पराए देश में परदेशी रह कर
इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ
उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास
किया, 10 क्योंकि वह उस स्थिर नींव वाले
नगर का इंतज़ार करता था, जिस के रचने
वाले और बनाने वाले परमेश्वर हैं।
11 विश्वास से सारा ने आप बूढ़ी होने पर
भी गर्भ धारण करने की ताकत पायी, क्योंकि
उसने वायदा करने वाले को सच्चा जाना था।
12 इस कारण एक ही जन से जो मरे हुए के
समान था, आकाश के तारों और समुद्र तट
की बालू के समान, अनगिनित वंश उत्पन्न
हुए।
13 ये सब विश्वास ही की दशा में मरे,
और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ नहीं पायीं,
लेकिन उन्हें दूर से देख कर खुश हुए और
मान लिया कि हम दुनिया में परदेशी और
बाहरी हैं। 14 जो ऐसा कहते हैं, वे साफ़ तौर
पर प्रगट करते हैं कि वे स्वदेश की चाहत
रखते हैं, 15 और जिस देश से वे निकल आए
थे, यदि उसके विषय में सोचते तो उन्हें
लौट जाने का अवसर था। 16 परन्तु वे एक
उत्तम अर्थात् स्वर्गिक देश की चाह रखते हैं,
इसीलिए परमेश्वर उन लोगों के परमेश्वर
कहलाने में उन से नहीं शर्माते, क्योंकि उन्होंने
उन लोगों के लिए एक नगर का इन्तज़ाम
किया है।
17 विश्वास ही से अब्राहम ने परखे जाने के
समय में इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और
जिस ने वायदों को सच माना था, 18 और
जिस से यह कहा गया था, 'कि इसहाक से
तुम्हारा वंश कहलाएगा' वह अपने एकलौते
को चढ़ाने लगा। 19 क्योंकि उसने मान लिया
था कि परमेश्वर सामर्थी हैं, कि मरे हुओं में
से जिलाएँ। इसलिए उन्हीं में से दृष्टान्त की
रीति पर उसने इसहाक को फिर पा लिया।
20 विश्वास ही से इसहाक ने याकूब और
ऐसाव को आने वाली बातों के विषय में
आशीष दी।
21 विश्वास ही से याकूब ने मरते समय
यूसुफ़ के दोनों बेटों में से एक-एक को
आशीष दी, और अपनी लाठी के सिरे पर
सहारा लेकर उपासना की।
22 विश्वास ही से यूसुफ़ ने, अपनी मौत के
समय इस्राएलियों के निकल जाने की चर्चा
की, और अपनी हड्डियों के बारे में आज्ञा दी।
23 विश्वास ही से मूसा के माता पिता ने
उसके पैदा होने के बाद तीन महीने तक छिपा
रखा, क्योंकि उन्होंने देखा कि बालक सुन्दर
है, और वे राजा की आज्ञा से न डरे।
24 विश्वास ही से मूसा ने बड़े हो जाने
पर फ़िरौन की बेटी का बेटा कहलाने से
इन्कार किया, 25 इसलिए कि उसे बुराई[a] में
थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के
लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा,
26 और मसीह के कारण निन्दित होने को

[a] **11.25** गुनाह

उसने मिस्र के भण्डार से बड़ा धन समझा, क्योंकि उसकी आँखें फल पाने की ओर लगी थीं।

27 विश्वास ही से उसने राजा के गुस्से की
परवाह न करते हुए, मिस्र को छोड़ दिया
क्योंकि वह अनदेखे को मानो देखता हुआ
विश्वास में बना रहा।

28 विश्वास ही से उसने फ़सह और खून
छिड़कने की विधि मानी, ताकि पहलौठों
का नाश करने वाला इस्राएलियों पर हाथ न
डाले।

29 विश्वास ही से इस्राएली लाल समुद्र
के पार ऐसे उतर गए, जैसे सूखी ज़मीन पर
से। परन्तु जब मिस्रियों ने वैसा ही करने की
कोशिश की, तो सब डूब मरे थे।

30 विश्वास ही से, सात दिन तक चक्कर
लगाने के बाद यरीहो की शहरपनाह गिर
पड़ी।

31 विश्वास ही से राहाब वेश्या आज्ञा न
मानने वालों के साथ नाश नहीं हुई, इसलिए
कि उसने भेदियों को सुरक्षा दी थी।

32 अब और क्या कहूँ? क्योंकि अभी
समय नहीं है, कि गिदोन का, बाराक का,
शिमशोन का, यिफ़तह का, दाऊद का,
शमूएल का, और भविष्यद्वक्ताओं का वर्णन
करूँ। 33 इन्होंने विश्वास ही के द्वारा राज्य
जीते, सही काम किए, प्रतिज्ञा की हुई चीजें
प्राप्त कीं, शेरों के मुँह बन्द किए, 34 आग की
लपटों को ठंडा किया, तलवार की धार से
बच निकले, कमज़ोरी में बलवन्त हुए, लड़ाई
में बहादुर निकले, विदेशियों की फ़ौजों को
मार भगाया।

35 महिलाओं ने अपने मरे हुओं को फिर
ज़िन्दा पाया। बहुत से मार खाते-खाते मर
भी गए, और आज़ादी न चाही, इसलिए कि
उत्तम पुनरुत्थान के भागी हों। 36 कई एक
ठट्ठा में उड़ाए जाने, और कोड़े खाने, वरन्
बान्धे जाने, और कैद में पड़ने के द्वारा परखे
गए। 37 उन पर पथराव हुआ, वे आरे से चीरे
गए, उनकी परीक्षा की गई, तलवार से मारे
गए, वे गरीबी में और क्लेश में और दुख
भोगते हुए भेड़ों और बकरियों की खालें ओढ़े
हुए, इधर उधर मारे-मारे फिरे। 38 वे जंगलों,
पहाड़ों, गुफ़ाओं, और पृथ्वी की दरारों में
भटकते फिरे। संसार उनके लायक न था,

39 और इन सभी ने विश्वास के द्वारा
अच्छी गवाही तो पाई, लेकिन तौभी उन्हें
प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। 40 क्योंकि
परमेश्वर ने हमारे लिए पहले से एक बेहतर
बात ठहराई थी, कि वे हमारे साथ ही उसे[a]
हासिल कर सकें।

12 इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा
बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो
आओ, हम हर एक बोझ को और उस गुनाह
को जो हमें आसानी से जाल में फँसाता है,
दूर करते जाएँ, और वह दौड़ जिस में हमें
दौड़ना है, धीरज से दौड़ें, 2 और विश्वास की
शुरूआत करने वाले और मज़बूत करने वाले
यीशु की ओर ताकते रहें, जिन्होंने उस खुशी
के लिए जो उनके आगे रखी थी, शर्म की
कुछ परवाह न करके, क्रूस का कष्ट सहा,
और परमेश्वरीय अधिकार[b] तक पहुँचे।

3 इसलिए उन पर ध्यान करो, जिन्होंने
अपने विरोध में गुनाहगारों की इतनी दुश्मनी
सह ली, कि तुम निराश होकर हिम्मत न छोड़
दो। 4 तुमने गुनाह से लड़ते हुए उससे ऐसा
मुकाबला नहीं किया, कि तुम्हारा खून बहा
हो। 5 और तुम उस उपदेश को जो तुम को
बेटों की तरह दिया जाता है, भूल गए हो, कि

[a] **11.40** प्रतिज्ञा की हुई वस्तु को [b] **12.2** राजासन

“हे मेरे बेटे, प्रभु की डाँट-डपट को तुच्छ न
जानो, और जब वह तुम्हें घुड़कें तो धीरज न
छोड़ना। 6 क्योंकि प्रभु, जिस से प्यार करते
हैं, उसको डाँटते-डपटते भी हैं, और जिसे
बेटा बना लेते है, उसको छड़ी भी लगाते हैं।”
7 तुम दुख को डाँट-फटकार समझ कर
सह लो। परमेश्वर तुम्हें बेटा-बेटी जान कर
तुम्हारे साथ बर्ताव करते हैं। वह कौन सा
बेटा-बेटी है, जिस को पिता की डाँट- डपट
नहीं सुननी पड़ती? 8 यदि वह डाँट- डपट
जिस के हिस्सेदार सब हुए हैं, तुम्हारी नहीं
हुई, तो तुम बेटे-बेटी नहीं, पर व्यभिचार की
सन्तान ठहरे! 9 फिर जब कि हमारे संसारिक
पिता भी हमें डाँटा फटकारा करते थे और हम
उन्हें आदर देते थे, तो क्या हम आत्माओं के
पिता के और भी अधीन न रहें, जिस से जीते
रहें। 10 दुनियावी पिता तो अपनी समझ के
अनुसार थोड़े दिनों के लिए अनुशासन करते
थे, परन्तु परमेश्वर तो हमारे फ़ायदे के लिए
करते हैं, कि हम भी उनकी पवित्रता[a] के
हिस्सेदार हो जाएँ। 11 इन दिनों में हर प्रकार
की डाँट- फटकार आनन्द की नहीं, परन्तु
शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी
जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, बाद
में उन्हें चैन के साथ सही जीवन जीने का
प्रतिफल मिलता है।
12 इसलिए थके हाथों और कमज़ोर घुटनों
को सीधे करो, 13 और अपने पाँवों के लिए
सीधे रास्ते बनाओ कि लँगड़ा[b] भटक न
जाए, परन्तु ठीक हो जाए।
14 सब से मेल मिलाप रखो, और उस
पवित्रता[c] के पीछे पड़े रहो,जिस के बिना
कोई प्रभु को बिल्कुल न देखेगा। 15 और
ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई
परमेश्वर की कृपा[d] से वंचित रह जाए, या
कोई कड़वी जड़ फूटकर दुख दे, और उसके
द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएँ। 16 ऐसा
न हो, कि कोई जन व्यभिचारी, या ऐसाव
की तरह टेढ़ा हो, जिस ने एक निवाले के
बदले अपने पहलौठे होने का पद बेच डाला।
17 तुम जानते तो हो, कि बाद में जब उसने
आशीष पानी चाही, तो वह अयोग्य गिना
गया, और आँसू बहा बहा कर चाहने पर भी
मन बदलाव का अवसर उसे न मिला।
18 जब परमेश्वर ने सीनै पहाड़ पर
नियमशास्त्र दिया था, उस समय जलती
आग, अन्धेरा, काली घटा और बवन्डर था,
ऐसे पहाड़ के पास तुम नहीं आए हो। 19 न
ही तुमने बिगुल[e] की सी आवाज़ में डरावना
सन्देश सुना, कि तुम्हें परमेश्वर की दोहाई
देनी पड़ी हो कि वह तुम से बातें न करें,
20 क्योंकि वे उस आज्ञा को न सह सके, “कि
यदि कोई पशु भी पहाड़ को छुए, तो उसे
पत्थरवाह किया जाए।” 21 और वह दर्शन
ऐसा डरावना था, कि मूसा ने कहा, “मैं बहुत
डरता और काँपता हूँ।”
22 परन्तु तुम सिय्योन के पहाड़ के पास,
और जीवित परमेश्वर के नगर स्वर्गिक
यरूशलेम के पास, 23 और लाखों स्वर्गदूतों
और उन पहलौठों की साधारण सभा और
चर्च[f] या जिन लोगों के नाम स्वर्ग में लिखे
हुए हैं, और सब के न्यायी परमेश्वर के पास,
और मुक्ति पाए हुए उन लोगों की आत्माओं
के पास जिन्हें निर्दोष ठहराया गया, 24 और

[a] **12.10** समानता [b] **12.13** कमज़ोर शिष्य [c] **12.14** सही जीवन [d] **12.15** अनुग्रह [e] **12.19** तुरही
[f] **12.23** कलीसिया

नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव
के उस खून के पास आए हो, जो हाबिल के
खून से उत्तम बातें कहता है।
25 सावधान रहो, और उस कहने वाले से
मुँह न फेरो, क्योंकि वे लोग यदि पृथ्वी पर
के चेतावनी देने वाले से मुँह मोड़कर न बच
सके, तो हम स्वर्ग पर से चेतावनी देने वाले
की अनसुनी करके कैसे बच सकेंगे? 26 उस
समय तो उनके शब्द ने पृथ्वी को हिला दिया,
परन्तु अब परमेश्वर ने यह वायदा किया है
कि एक बार फिर मैं केवल पृथ्वी को नहीं,
वरन् आकाश को भी हिला दूँगा।
27 यह वाक्य 'एक बार फिर' इस बात को
प्रगट करता है, कि जो वस्तुएँ हिलाई जाती
हैं, वे बनायी हुई वस्तुएँ होने के कारण टल
जाएँगी, ताकि जो वस्तुएँ हिलाई नहीं जाती,
वे अटल बनी रहें।
28 इस कारण हम इस राज्य को पाकर
जो हिलने का नहीं, आभारी हों और उस
मौके को हाथ से न जाने दें, जिस के द्वारा
हम समझदारी, और आदर के साथ ऐसी
परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं जो
उन्हें पसन्द है। 29 क्योंकि हमारे परमेश्वर
भस्म करने वाली आग हैं।

13 भाईचारे का प्यार बना रहे।
2 मेहमान-नवाज़ी करना न भूलना,
क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने में ही
स्वर्गदूतों की आवभगत की है। 3 कैदियों
का ऐसा ध्यान रखना जैसे कि उनके साथ
तुम भी कैद में हो। जिन के साथ बुरा बर्ताव
किया जाता है, उनका भी यह समझ कर
ध्यान रखा करना कि हमारे पास भी एक
देह है।
4 विवाह सब में इज़्ज़त की बात समझी
जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे, क्योंकि
परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों
का इन्साफ़ करेंगे।
5 तुम्हारा स्वभाव बिना लालच का हो,
और जो तुम्हारे पास है, उसी पर सन्तोष
करो, क्योंकि परमेश्वर ने आप ही कहा है,
"मैं तुम्हें कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुम्हें
त्यागूँगा।"
6 इसलिए हम बिना झिझक के कहते हैं,
"प्रभु मेरे सहायक हैं, मैं न डरूँगा। इन्सान
मेरा क्या कर सकता है?"
7 जो तुम्हारे अगुवे हैं, और जिन्होंने तुम्हें
परमेश्वर का संदेश दिया है, उन्हें याद रखो
और ध्यान से उनके चाल चलन का नतीजा
देख कर उनके विश्वास की नकल करो।
8 यीशु मसीह कल और आज और
युगानुयुग एक से हैं। 9 अनेक प्रकार के और
ऊपरी[a] उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि
मन का अनुग्रह से स्थिर रहना भला है, न
कि बलिदान चढ़ाई गई खाने की चीजों से,
जिन से खाने वालों को कुछ फ़ायदा न हुआ।
10 हमारी एक ऐसी वेदी है, जिस पर से खाने
का हक उन लोगों को नहीं, जो तम्बू की सेवा
करते हैं। 11 क्योंकि जिन जानवरों का खून
महा पुरोहित अपराध-बलि के लिए पवित्र
स्थान में ले जाता है, उन जानवरों की देह
छावनी के बाहर जलाई जाती है।
12 इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को
अपने ही खून के द्वारा पवित्र करने के लिए
यरूशलेम के बाहर दुख उठाया। 13 इसलिए
आओ, उनकी निन्दा अपने ऊपर लिए हुए
यहूदी मत की रीति विधियों का त्याग कर
डालें। 14 क्योंकि यहाँ हमारा कोई स्थिर रहने

[a] **13.9** अजीब

वाला शहर नहीं, वरन् हम एक आने वाले
शहर की ताक में हैं।
15 इसलिए हम यीशु के द्वारा स्तुति रूपी
बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उनके
नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के
लिए हमेशा चढ़ाया करें। 16 भलाई करना,
और उदारता न भूलो, क्योंकि परमेश्वर ऐसे
बलिदानों से खुश होते हैं।
17 अपने अगुवों की मानो और उनके
अधीन रहो, क्योंकि वे उन लोगों की तरह
तुम्हारे लिए जागते रहते हैं, जिन्हें हिसाब देना
पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न
कि दुःख से, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ
फ़ायदा नहीं।
18 हमारे लिए प्रार्थना करते रहो, क्योंकि
हमें भरोसा है कि हमारा विवेक शुद्ध है,
और हम सब बातों में आदर के साथ जीवन
बिताना चाहते हैं। 19 और इसके करने के
लिए मैं तुम्हें और भी समझाता हूँ, कि मैं
जल्दी तुम्हारे पास फिर आ सकूँ।
20 अब शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु
यीशु को, जो भेड़ों के महान रखवाले हैं, और
सनातन वाचा के खून से मरे हुओं में से जिला
कर ले आए, 21 तुम्हें हर एक अच्छी बात
में स्थिर करें, जिस से तुम उनकी इच्छा पूरी
करो और जो कुछ उनको पसन्द है, उसे यीशु
मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करें। उन्हीं की
बड़ाई युगानुयुग होती रहे। ऐसा ही हो।
22 हे भाईयो, मैं तुम से बिनती करता हूँ, कि
इस शिक्षा की बातों को सह लो, क्योंकि मैंने
तुम्हें थोड़ा सा ही लिखा है।
23 तुम यह जान लो कि तीमुथियुस हमारा
भाई छूट गया है और यदि वह जल्द आ गया,
तो मैं उसके साथ तुम से भेंट करूँगा।
24 अपने सब अगुवों और सब पवित्र लोगों
को सलाम कहो। इटली वाले तुम्हें सलाम
कहते हैं।
25 तुम सब पर कृपा बनी रहे। ऐसा ही हो।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com